संपादकीय

अपने घर गांव से विस्थापित हुए लोगों की मानसिकता कुछ अजीब सी होती है। खास कर पहली पीढ़ीयों की, जो कमा कर लौट जाने के लिए आयी होती है, वो सारी उम्र वापस लौटने के सपने देखते-देखते बूढ़ी होते होते फना हो जाती है। वो समय के साथ आ रहे बदलावों को समझ नहीं पाती है क्योंकि वह तो उसी पिछले समय और दुनिया में रह रही होती है, जिसे वो पीछे छोड़ आयी होती है। पुरानी फिल्म काबुलीवाला में वर्षों जेल में बिताने के बाद आजाद हुआ पिता अपनी नन्हीं सी बेटी के नन्हे-नन्हे हाथों के लिए कंगन खरीदता है।

हमारा भी यही हाल है। मुंबई हो या दिल्ली, नागपुर हो या अमेरिका। हम अपने सीने से उस हिमाचल को चिपकाये बैठे हैं जो शायद अब हिमाचल में भी नहीं है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम हिमाचल को विकसित होते नहीं देखना चाहते हैं। हमने यहां महानगरों में अनियोजित विकास के चलते स्थानीय संस्कृति और लोगों को कंगाल होते बड़े नजदीक से देखा है। जमीन के मालिकों को अपनी जमीन पर किरायेदार बनते देखा है। हम नहीं चाहते कि विकास का यह दु:स्वप्न हिमाचल में भी दोहराया जाए। हिमाचल वनस्पति सम्पन्न पहाड़ों और सदानीरा निर्मल नदियों के लिए जाना जाता है। इसके पास पहाड़ी बोलियों की समृद्ध संस्कृति है।

पिछले दिनों डिजाईनिंग की दुनिया के बादशाह न्यूयार्क के मासीमो तथा उनकी पत्नी भारत आए थे। अमेरिकन एयरलाईन्स का लोगो, न्यूयार्क सबवे तथा आईबीएम कंप्यूटर के मेन्यूल के डिजाईन बनाने वाले के रूप में इनकी ख्याति है। इस सिलसिले में उन्होंने बड़ी महत्वपूर्ण बातें कहीं।

उनके अनुसार भारत फिर से अपने-आप को संघटित करने में लगा हुआ है। इसलिए इस पर भूमंडलीकृत होने का बहुत बडा खतरा मंडरा रहा है। पश्चिमी देशों में अनेक स्थानीय संस्कृतियां भूमंडलीकरण में गुम हो गयीं। संस्कृति बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसे नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। किसी को भी महज भूमंडलीकृत होने के लिए अपने सांस्कृतिक मूल्यों को नहीं गंवाना चाहिए। यदि भारत में भी ऐसा होता है तो यह एक बहुत बड़ी और अमूल्य धरोहर की हानि होगी। इतिहास को भुलाया नहीं जाना चाहिए। कहीं ऐसा न हो संस्कृति के नाम पर हमारे पास उसका स्वांग भर रह जाए। इसलिए हमें अपने सांस्कृतिक प्रतीकों को सहेजना चाहिए।

संस्कृति को सहेजने का काम दिखावे से नहीं हो सकता। हमें उसे अपनाना होगा। अपनाया जाना तभी संभव है जब हमारे लिए उसका कोई मोल हो। संस्कृति का मोल हमें तभी समझ आएगा जब हम उससे जुड़ेंगे। जुड़ने के लिए संस्कृति को आत्मसात करना होगा। इसमें माता-पिता और शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

हमें याद रखना होगा कि दरवाजे को बंद करके न कुछ सहेजा जा सकता है न आत्मसात किया जा सकता है। भारतीय सभ्यता के जीवित रहे चले आने के पीछे इसी खुलेपन की ताकत का होना है। किसी भी आंधी में बह जाने या भंजित हो जाने के बाजाए इसमें झुक जाने का बड़प्पन है। आंधी तूफान में से ही यह संजीवनी पाती रही है और हर बार पुनर्नवा होती रही है। हमें इसी गुर को जीवित रखने का उद्यम करना होगा। हिमाचल मित्र के माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को आत्मसात करने का ही प्रयत्न करना चाहते हैं।

रेखांकन: मुदित

हम हिमाचल मित्र की प्रस्तुति को और बेहतर बनाना चाहते थे। इस कोशिश में अनुमान से अधिक वक्त लग गया। कंप्यूटर में हिंदी में काम करना अभी भी सहज नहीं है। हमें सारी सामग्री को नए सिरे से सुधारना पड़ा है। अगर सरकार हिंदी को वास्तव में लाना चाहती है तो हिंदी के फौंट का मानकीकरण तुरंत होना चाहिए। इस बीच पाठकों ने याद कराना भी शुरु कर दिया। अल्प संसाधनों से काम करने में ऐसी कठिनाईयां आती हैं। लेकिन हम निरंतरता बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आपका विश्वास ही हमारी पूंजी है।